भूमिका

सृष्टि में प्रत्येक प्राणी प्रेम के सरस रूप का अनुभव करता है। संपूर्ण विश्व को प्रेम ने एक सूत्र में बांध रखा है। प्रेम के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। स्थूल दृष्टि से देखा जाए तो यह प्रकृति का एक धर्म ही जान पड़ता है। साहित्य में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय में भी प्रेम विषय की प्रधानता है। यही प्रेम जीवन में प्राणियों के मध्य विभिन्न संबंधों में प्रकट होता है।

हमारे मन के दो विभाग हैं, हृदय और मस्तिष्क अथवा भावना या बुद्धि। कविता का क्षेत्र हृदय अथवा भावना होता है। भारतीय साहित्य, विशेषकर संस्कृत साहित्य में वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति, माघ, श्रीहर्ष और जयदेव आदि ने प्रेम का विस्तृत वर्णन किया है। आदिकाल में विद्यापति, भक्तिकाल में सूफ़ी काव्य, तुलसी और सूरदास, रीतिकाल में घनानंद जैसे कवियों ने प्रेम का अत्यंत सरस वर्णन किया है। आधुनिक युग में भी प्रेम काव्य अत्यंत समृद्ध है।

प्रगतिशीलत्रयी के स्तंभ शमशेर बहादुर सिंह का पूरा जीवन ही प्रेम से सराबोर रहा है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होने वाले शमशेर ने प्रेम को अपने जीवन का साथी बनाया और आजीवन उसके साथ रहे। शमशेर के काव्य की मूल प्रेरणा प्रेम है। हम देखते हैं कि शमशेर न केवल प्रेम के प्रेमी है, बल्कि उन्होंने प्रेम को अपना दर्शन भी माना है। शमशेर का प्रेम फलक बड़ा व्यापक है। उनके प्रेम को प्रणय या दांपत्य में सीमित न करते हुए उनके समग्र, व्यापक और उद्दात्त आयामों को ग्रहण किया। यही कारण है कि राष्ट्र के प्रति, मानवता के प्रति, प्रकृति के प्रति और व्यक्ति के प्रति उनके काव्य में प्रेम बिखरा है।

मेरे लघु शोध का विषय 'शमशेर के काव्य में प्रेम का स्वरूप' है। इस विषय को अपने शोध अध्ययन का केंद्र बनाने के पीछे कारण कविता में रूचि का होना है। परास्नातक के दौरान पाठ्यक्रम में शमशेर की कविता पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ, वहीं से उन्हें जानने-समझने की जिज्ञासा प्रकट हुई। यही कारण रहा है कि शमशेर की कविता में प्रेम के जो अलग-अलग रूप दिखाई देते हैं, उस विषय पर मैंने शोध कार्य करने का निश्चय किया। शोध के अंतर्गत प्रेम के स्वरूप की चर्चा की गई है, जिसमें प्रेम के स्वरूप के साथ-साथ शमशेर के काव्य में प्रेम के क्या स्वरूप रहे हैं इस पर विशेष ध्यान दिया गया है।

इस लघु-शोध प्रबंध को लिखने के क्रम में निरंतर यही कोशिश रही है कि यह वस्तुनिष्ठ एवं अतिवाद से मुक्त हो। प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध चार अध्यायों में विभाजित है।

इस लघु शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय का शीर्षक 'प्रेम की अवधारणा' है। इस अध्याय में प्रेम के स्वरूप, व्युत्पत्ति, परिभाषा और वर्तमान समय में प्रेम की अवधारणा पर चर्चा की गई है। हिंदी साहित्य में प्रेम को आदिकाल से पहचान मिली है। हालांकि हर युग में परिस्थिति के अनुसार प्रेम का बाह्य स्वरूप बदलता रहा है, किंतु उसका मूल रूप आज भी साहित्य के लिए प्राण है। वर्तमान समय में प्रेम की अवधारणा बदली तो प्रेम की परिभाषा में भी बदलाव हुआ है अतः इस अध्याय में वर्तमान समय में प्रेम में आ रहे बदलाव की भी पड़ताल मैंने की है।

दूसरे अध्याय 'शमशेर का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व' में वस्तुनिष्ठ दृष्टि से उन प्रश्नों पर विचार किया गया है, जो सीधे-सीधे मेरे शोध विषय से संवाद करते हैं। इस अध्याय में शमशेर के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व पर बात की गई है। इसके पश्चात् उनके कृतित्त्व की चर्चा की गई है साथ ही उनके द्वारा पत्रिका के संपादन के रूप मे किए गए कार्यों और प्राप्त पुरस्कारों का विवरण भी दिया गया है।

तृतीय अध्याय 'शमशेर के काव्य में प्रेम के विविध स्वरूप' में शमशेर के प्रेम के चार स्वरूपों पर विचार किया गया है। शमशेर की कविताओं में प्रेम भावना के प्रति निरंतरता है। आदि से लेकर अंत तक वे प्रेम में पूर्णता प्राप्ति की ओर अग्रसर रहे। इस अध्याय में उनका राष्ट्र प्रेम, प्रकृति प्रेम, मानवीय प्रेम आदि पर प्रकाश डाला गया है।

चतुर्थ अध्याय 'शमशेर के काव्य का शिल्प' है। इसमें उनकी गज़ल, रुबाई, सॉनेट छंद और अलंकार को आधार बनाकर उनके काव्य के शिल्पगत वैशिष्ट्य को विश्लेषित किया गया है।

प्रबंध के अंत में उपसंहार के अंतर्गत शोध का निष्कर्ष दिया गया है तत्पश्चात संदर्भ में पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं तथा सहायक कोषों की सूची दी गई है।

मैं अपने शोध निर्देशक सम्माननीय प्रोफेसर प्रीति सागर जी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके स्नेहिल अभिभावक और सुचिंतित मार्गदर्शन में प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध का यह स्वरूप प्राप्त हुआ। ।

मैं साहित्य विभाग के शिक्षक प्रोफेसर कृष्ण कुमार सिंह, डॉ.रामानुज अस्थाना, डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी, प्रोफेसर अखिलेश दुबे, प्रोफेसर अवधेश कुमार शुक्ल, डॉ. बीर पाल सिंह यादव एवं डॉ. रुपेश कुमार सिंह के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिनसे समय-समय पर प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष सहयोग मिला।

दुःख की घड़ियों में सदैव ऊर्जा प्रदान करने वाले पिता श्री सनातन मिश्र, माता कमुदुलता मिश्रा, बहन, समीक्षा मिश्रा और भाई नीलाक्ष मिश्र का ऋण मैं आजीवन नहीं उतार सकती। वर्तमान समय में यह लघु-शोध प्रबंध उनके आशीर्वाद एवं प्रेम का प्रतिफल ही मालूम पड़ता है।

इस लघु-शोध प्रबंध लिखने के क्रम में मेरे प्रिय मित्र अनिल शुक्ला ने अनेक व्यस्तताओं के मध्य समय निकालकर मुझे मानसिक रूप से लेकर शोध संबंधी विचार-विमर्श और सूझ-बूझ से मेरा मार्गदर्शन किया। इस सहयोग के लिए मैं अपने मित्र का आभार व्यक्त करती हूँ।

शोध-प्रबंध लिखने के क्रम में मैं भावनात्मक उतार-चढ़ाव के दौर से कई बार परेशान हुई, इस सफ़र में मेरी हमसफ़र रही अग्रजा प्रसिद्ध लेखिका हुस्न तबस्सुम निहाँ दी और सहपाठी आशीष कुमार यादव और नरेंद्र कुमार सिंह का मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं अपने अग्रज भाई रोशन कुमार प्रसाद एवं सहपाठियों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर इस लघु-शोध प्रबंध को पूरा करवाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त अन्य कई और नाम भी हैं, जो जाने-अंजाने छूट जा रहे हैं उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ।

श्वेता मिश्रा